VOL- VII ISSUE- III MARCH 2020 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 6.293 ISSN 2349-638x

# ज्योति जैन के लघुकथाओं में स्त्रीविमर्श

**शोध छात्र**
**इरफान बाळासो नायकवडे**
कबनूर,परिट गल्ली,
वीर सावरकर कॉर्नर, ता. हातकणंगले,
जि. कोल्हापूर

विमर्श इस शब्द के लिये अंग्रेजी मे 'डिस्कोर्स' यह पर्याय है| और 'डिस्कोर्स ' लॅटिन शब्द 'Discursus'(डीस्कर्सर) शब्द का पर्याय है | जिसका अर्थ है बहस, संवाद,वार्तालाप और विचारों का आदान-प्रदान |

यहाँ पर हम स्त्री-विमर्श की बात कर रहे है | विमर्श इस शब्द का अर्थ हमनें आसानी से समज लिया लेकीन, स्त्री को समजना इतना आसान है? बिलकुल नही | स्त्री को बालिका, युवती, माँ, बहन, पत्नी, देवी ऐसे कई रुपों में देखते है | स्त्री को जगत जननी कहते है | जो ममता, करुणा से भरी है | और संसार का महत्वपूर्णहिस्सा है |

लेकीन इस देवी स्वरूप स्त्री को वर्तमान में बहुत पीडा सहनी पड रही है | वर्तमान में स्त्री विमर्श को देखने से पहले उसके इतिहास को थोडा समजना पडेगा | प्राचीन और मध्यकाल में स्त्रीयो की स्थिति अत्यंत दयनीय थी| पुरुष समाज ने उसे सिर्फ दासी, भोग की वस्तु आदि बनाये रखा| उसे शिक्षा का तो बिलकुल अधिकार नही था | बहुत वर्षो तक वह अत्याचार सहती रही है |

कुछ लोगोंने तो उसे धर्म-सिद्धि प्राप्ति के आदि के लिए उसका अनैतिक उपभोग उचित माना | किसी ने भी उसका सन्मानपूर्वक विचार नही किया है| साहित्य का इतिहास देखा जाये तो रचनाकारों ने भी उसके यौवन को आकर्षक रूप में ही प्रस्तुत किया| सीता जी को भी अग्नि-परिक्षा देनी पडी थी |

कुछ सालों बाद स्त्री-विमर्श की बाते सामने आयी | नारीवाद, नारी-विमर्श आदि बाते पहले पश्चिमी देशों में ही हुई| फिर उसका अनुकरण यहाँ होने लगा| पश्चिमी देशों में महिलाओं नेअपने अधिकारों के लिये आंदोलन चलाए| धिरे-धिरे महिलाओं को अपने मत (vote) का अधिकार मिलने लगा |

हमारे देश में 19 वी सदी तक भी नारी को कोई विशेष अधिकार नही थे | स्त्री-शिक्षा की पहल हमारे महात्मा फुले जी ने और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले जी ने की | वहाँ से नारी को स्वयं का अहसास होने लगा | फिर धिरे-धिरे वो अपने अधिकारों के लीये लडने लगी | और अपने विवेक से समाज के हर क्षेत्र में पुरुष के साथ आगे बढने लगी|

21 वी सदी में स्त्री-विमर्श पर बहुत हद तक चर्चा हो रही है | बहुत सारे लेखक, लेखिकाएँ स्त्री-विमर्श के बारे में अपनी बात पाठकों तक पहुंचा रही है | इसमें बहुत लंबी सूची है | जैसे जयंती रंगनाथन, डॉ. रंगनाथन, डॉ. स्मिता मिश्रा, डॉ. मधु बरूआ, ममता कालिया आदि प्रसिद्ध रचनाकार है |

इन महिला लेखिकाओं में एक और नाम भी महत्वपूर्ण है ज्योति जैन| मध्यप्रदेश में पली-बढी ज्योती जी ने बहुत सी कहानियाँ, कविताओं के द्वारा नारी समस्याओं को पाठकों तक पहुंचाने का कार्य कर रही है| उनकी रचनाओं को देखकर ऐसा लगता है की,वे एक महिला शक्ति की मशाल बनकर सामने आ रही है | और अपने लेखनी द्वारा नारी को जागृत करने कार्य कर रही है|

ज्योति जी ने 'सेतू तथा अन्य कहानियाँ' इस कहानी संग्रह में नारी-विमर्श की ही चर्चा की है | इसमें से कुछ चुनिंदा कहानीयों को हम देख सकते है | इन कहानीयों में नारी-विमर्श का आधुनिक बोध दिखाई देता है| लेखिका ने इन कहानीयों में नारी की अलग-अलग समस्याओं को रखा है|

ज्योति जी के'सेतू तथा अन्य कहानीयाँ' इस कहानी संग्रह में 'छोडा हुया' नामक कहानी में विवाह के बाद तलाक पाने वाली महिला का विवाह फिरसे अविवाहित पुरुष के साथ होता है, लेकीन विवाह के कुछ दिनो बाद पुरुष उसे तिरस्कृत करता है | अंत में विवाह के बहुत सालों बाद वो महिला उस अत्याचारीत पती को छोड कर घर से निकल जाती है|

वो महिला घर छोडने से पहले पती के लीये एक पत्र लिखती है | और उसमे पती द्वारा किये अत्याचार को स्पष्ट करती है | पत्र में वो अपने दु:ख व कष्टो को स्पष्ट करती है | किस प्रकार पती द्वारा अत्याचार हुये उसे बडी पीडा के साथ लिखती है | कितने सालों तक वह पती से प्रताडीत होती रही | भारतीय समाज जो पुरुष प्रधान है उसे वह डरती रही | माता-पिता के इज्जत को लेकर वह हमेशा पती द्वारा किये जाने वाले अत्याचार को सहती रही|

लेकीन जब उसकी सहनशक्ति खत्म हुई तो उसने घर छोडने का निर्णय लिया | वह पत्र में पती से सवाल करती है कि, वह पूर्व पती के अत्याचार से छुटकारा पाने के लिये मैने तलाक लिया | लेकीन तुम ने एक छोडी हुई औरत के साथ विवाह क्यों किया ? ताकि जिंदगीभर मुझे जलिल करते रहो? या पापा के संपत्ति पर तुम्हारी लार टपक रही थी? आदि सवाल वह अपने पती को अक्रोशीत होकर पुछती है|

वह स्पष्ट करती है कि, किस प्रकार से पती के घर में एक छोडी हुई औरत का अपमान होता रहता है | दीर्घ समय से चली इस प्रताडना को जब वह नही सह पाती तब वह घर से बाहर निकलने का निर्णय लेती है | और पत्र के अंत में लिखती है,"छोड गई...हाँ....तुम 'छोडे हुए' हो | तुम 'छोडे हुए' रहोगे |" यह लिखकर इतने सालों तक किसप्रकार घर-परिवार और समाज द्वारा उसे 'छोडी हुई' यह सुनना पडा | उसीप्रकार अब पती को भी लोग 'छोडा हुआ' कहे और पती मेरी पीडा को समझे ऐसा वो चाहती है|

लेखिका ज्योति जी ने इस कहानी में एक तलाकशुदा औरत फिरसे विवाह करती है | लेकीन समाज द्वारा उसे स्विकार नही किया जाता | और वह बार- बार प्रताडीत, अपमानित होकर जीवन व्यतीत करती है यह स्पष्ट किया है|

ज्योति जी ने 'पारस' इस कहानी में आर्थिक परिस्थिति से विवश होकर गरीब असहाय्य औरते वेश्या व्यवसाय करने के लिये विवश होती है लेकीन समजदार महिला के संपर्क मे आने से उनमे सुधार कैसे होता है यह बताया है|

'पारस' कहानी में जब शालू नामक एक वेश्या निरू नामक एक समजदार पढी-लिखि औरत के संपर्क में आती है तो उसका जीवन किस तरह बदलता है साथ ही वह अपने बुरे काम को छोडकर अच्छे विचारों के साथ अपना जीवन व्यतीत करने लगती है|

'पारस' कहानी में लेखिका ने एक अच्छे विचारों वाली औरत दुसरे गलत रास्ते पे चलने वाले औरत का जीवन बदल सकती है | यह बताया है |'शालू' अंत में सोचती है कि, निरू नामक 'पारस' जैसी औरत अगर बस्ती के अन्य महिलाओं, लडकियों को छु जाये तो ये सभी इस अंधकार भरे गलत धंदे से दूरप्रकाशमय अच्छे जीवन के जीने लिये निकल पडेंगी|

'महिला दिवस' इस कहानी में वर्तमान में 'महिला दिवस' पुरे विश्व में जोरों से मनाया जाता है | इस दिन महिला सबलीकरण, महिला हक्क, स्वातंत्र्य आदि पर बहुत होती है, लेकीन आज एक महिला ही दुसरे महिला का किस प्रकार मानसिक शोषण कर रही है यह स्पष्ट किया है|

'महिला दिवस' इस कहानी में आभा, चारू, गीतू ये तीनो सहेलिया 'आंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' मनाकर खुद के परेशानीयों पर विचार कर रही है|

आभा बाताती है कि, उसका ज्युनिअर भ्रष्टाचार करके उससे ज्यादा इन्क्रिमेंट लेता है, और वो औरत होने के कारन आवाज नही उठा पाती | और 'चारू' जो लेक्चरर है, उसकी विभागाध्यक्षा एक महिला है | जो चारू को बहुत दिनों से मानसिक तकलीफे दे रही है|

'महिला दिवस' में आभा, चारू अपनी-अपनी परेशानियाँ गीतू से कहती है | गीतू सोचती है कि,'महिला दिवस' मनाया जा रहा है, लेकीन महिलाओं कि समस्या पर सिर्फ बाते ही हो रही है, कार्य नही | आज एक महिला को दुसरी अधिकारीक महिला द्वारा ही समस्याग्रस्त होना पड रहा है |

गीतू अपने सहेलियों को हौसला देने कि बात कर रही है और समस्या के खिलाफ खडे रहने का संदेश दे रही है|

ज्योति जैन ने 'महिला दिवस' इस कहानी द्वारा एक महिला दुसरे महिला द्वारा समस्याग्रस्त होती है तब उसे न डरते हुये मुकाबला करने के लिये, अपने अधिकार के लिये लडने के लिये प्रेरित कर रही है |

'आरोही' नामक कहानी में लेखिका ने सुहास और आरोही इन दो पती पत्नी के एक दुसरे के प्रती समर्पण भाव को स्पष्ट किया है, साथ एक पती अपने पत्नी के भावनाओं का सन्मान किस प्रकार करता है, यह बताया है |

'आरोही' इस कहानी में सुहास और आरोही कि सगाई होकर विवाह तय होता है | आरोही और सुहास दोनों पढे-लिखे है और मध्य वर्ग से संबंध रखते है सगाई के बाद आरोही को लगता है कि सुहास उसके लिये कुछ खास गिफ्ट लाये लेकीन ऐसा नही होता | आरोही ने एक बार सुहास को एक पर्स गिफ्ट किया, जिसपर आरोही ने अपना नाम लिखा था | सुहास को आरोही के साथ हुये वार्तालाप से पता चलता है कि, आरोही को अपना नाम कितना पसंद है|

जब दोनों कि शादी होकर घर पर आते है तो, वहाँपार कुछ रस्में निभाही जा रही थी | जिसके द्वारा नव-वधू का नाम बदला जाता है | तब सुहास ने अपने माँ और दादी से कहकर आरोही का नाम वही रखने का तय करता है | और सभी मान जाते है | पती ने परंपरा को तोडकर मुझे इतना सम्मान दिया ये देखकर आरोही बहुत खुश होती है|

इस कहानी द्वारा ज्योति जी ने एक पती अपने पत्नी के लिये परंपराएँ छोड सकता है यह बताया है | नारी सम्मान, अस्तित्व के लिये पुरुष के कर्तव्य को स्पष्ट किया है|

'फतह' इस कहानी में तृप्ति जो कॉलेज कि छात्रा है और उसे हॉस्टेल में अपने दमे कि बिमारी के बारे में पता चलता है | एक दिन अपने रूम में सोई हुई तृप्ति को अचानक अपनी सांसे जोरों से चलने का अहसास होता है | उसकी सहेली पल्लवी और कॉलेज कि सभी लडकियाँ साथ ही मिश्रा मैडम आदि सभी ने उसे तुरंत अस्पताल ले जाती है|

वहाँ पर उसके बिमारी का पता उसके साथ- साथ उसके परिवार और होनेवाली सास को पता चलता है | होनेवाली सास बहुत घुस्सा होकर अस्पताल में सभी को बहुत सुनाती है| तब डॉ. भार्गव सभी को समझाते है कि, बिमारी का इलाज होने के बाद तृप्ति बिलकुल ठीक हो जायेगी| और इलाज चलता रहता है |

तृप्ति अपने होनेवाले पती से कहती है की, बिमारी के वजह से अगर वो विवाह नही करना चाहता है तो वह वैसा निर्णय ले सकता है | और कुछ दिनों मे तृप्ति ट्रेकिंग कोंम्पिटिशन के लिये जाती है और वहाँ से मेडल भी प्राप्त करती है |

इस कहानी में लेखिका ज्योति जी ने तृप्ति को एक सशक्त महिला के रूप में दिखाया है, बिमारी से लडते हुये वह अपने जीवन के निर्णय लेने के लिये स्वतंत्र है| और अंत में वह अपने लक्ष्य में सफल होती है | लेखिका ने यहाँपर तृप्ति जैसे स्वतंत्र विचारोवाली महिला को आगे बढने के लिये उसकी सहेली पल्लवी, मिश्रा मैडम और डॉ. भार्गव आदि लोग किस तरह प्रेरित करते है यह बताया है | और हमें भी महिला को उसके विचार रखने के लिये सहाय्यता करनी चाहिये यह संदेश दे रही है |

आज नारी स्वयं अंतर्प्रेरीत होकर अपने समस्याओं का समाधान करती हुई दिखाई दे रही है | वह वर्तमान की चुनौतियों को स्विकार कर रही है | और प्रगती पथ पर चलते यश प्राप्त कर रही है | और समाज को दिशा भी दे रही है | स्त्री-विमर्श को आज नई सोच मिल रही है | साहित्य में भी आज इसपर चर्चा हो रही है | लेखिका ज्योति जी ने अपने लेखनी द्वारा आरोही, तृप्ति, गीतू, नीरू, शालू जैसे पात्रों को सामने लाकर समाज को इन स्वयं प्रेरित नारीयों के संघर्ष को सामने रखा है | और हमे भी नारी के अस्तित्व के प्रती जागृत रहने का संदेश दिया है|

संदर्भ :

1) जैन ज्योति- सेतू तथा अन्य कहानियाँ- (दिशा प्रकाशन- दिल्ली- प्रथम संस्करण-2014)
2) श्रीमती प्रमिला दाधीच-आधुनिक समाजमें कार्यशील महिलाऐं- (प्रकाशक-मार्क पब्लिसर्स-जयपूर-प्रथम संस्करण-2009)
3) https://shabdkosh.raftaar.in
4) https://hindi.feminisminindia.com